Visit to AASRA

दुनिया दोरंगी

दिनाँक 10 फरवरी 2018 को विद्यालय की ओर से कक्षा बारहवीं के साथ श्यामला हिल्स स्थित वृद्धाश्रम "आसरा" जाने का अवसर मिला। रंग-बिरंगे बोगनवेलिया से लदी घाटी से उतरते हुए गतिविधि सूत्रधार डा॰ दिलीप पंडया के शब्द बार-बार कौंध रहे थे कि केवल फोटोग्राफी ही नहीं बल्कि मनोभावों को भी कैद कर लाना है। इसी बीच छात्रों ने अपने-अपने कार्यों का विभाजन भी कर लिया था, किसे सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन करना है, किसे नाश्ता परोसना है, कौन कंबल बाँटेगा आदि।

" यहाँ तक छोड़ जाने की शुक्रिया बच्चों

गुज़र जाएगी ज़िंदगी हँसते-हँसते"

"आसरा" प्रवेशद्वार पर लिखी ये पंक्तियाँ पढ़ते ही लगा माँ-बाप का दिल कितना बड़ा होता है कि घर से दूर वृद्धाश्रम छोड़े जाने पर भी वे शुक्राना गा रहे हैं, कोई गिला नहीं, कोई शिकवा नहीं।

बच्चों का ठिठोली, कहकहे, मस्ती का जो आलम साथ चल रहा था, वृद्धाश्रम पहुँचते ही एकाएक ठहर गया, उभर आयी एक व्याकुलता, जैसे पूछ रही हो क्यों छोड़ दिया इन्हें बेसहारा।

जब इधर महिलाओं के कमरों में गए तो कहीं काँखने की आवाज़, कहीं बुदबुदाती आरती के स्वर, जलती दिया-बाती बरबस ध्यान खींच रही थी। कुछ तो बिस्तर से उतरना ही नहीं चाहती थीं। उधर पुरुष धूप में बैठे पान-सुपारी और कुछ बीड़ी का धुआँ छोडते गपशप में मस्त थे। इस महफिल का कद्र थे सुंदरलाल जी, जो दाहिना हाथ न होते हुए भी सरौते से सुपारी काट रहे थे। सरौता इन बच्चों के लिए किसी कौतूहल से कम नहीं था। उनके सिर पर रंगीन चुनरी प्रिंट का केसरिया साफा था और झबरीला मूंछे रोबदार। पूछने पर हाथ कटने की बात को छुपाते हुए कह ही गए–'तीन बार मरने की कोशिश के बाद भी अब तक जी रहे हैं।'

बूढ़ी फातिमा से 'कैसी है आप' पूछे जाने पर उनका कहना था-'शरीर का तकलीफ है पर तुम सब बच्चों के आने से दूर हो गयी। बच्चों ने सबको नाश्ता कराया और सामुदायिक कद्र की ओर चलने को कहा। वह सब एकत्रित होते हुए अपने अगल-बगल की सीट मनपसंद साथी के लिए छेक रहे थे। एक बूढ़ी स्त्री जो सलवार–कुर्ता और मटमैला-सा शॉल ओढ़े थी। उसे लोग दूर कर रहे थे क्योंकि वह कई-कई दिन नहाती नहीं है। एक धीमी—सी आवाज़ सुनाई पड़ी, -' मुसलमान है'। झपते हुए उसने मुझे बताया कि वह सिर धो कर कल ही तो नहायी थी। मेरे पास बुलाने पर भी वह दूर ही बैठी रही निशब्द। पर जैसे कह रही हो मैं अशक्त, निबल, मग उठा नहीं पाती, कपड़े रख नहीं पाती।

सिद्धांत के कुशल संचालन म शुरू हुआ सांस्कृतिक कायक्रम। यहाँ सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किए गए. बुजुर्गा ने भी खूब नाचा-गाया, ठुमका लगाया। सबके चेहरां पर मुस्कुराहट थी। बहुत मनुहार के बाद जो गाने दादा-दादियां ने सुनाये, उनम गजब-सी कोशिश और गहरा दद था। एक हा दद कि कैसी दुनिया है, जिसने हम किनारे कर दिया।

एक ने गाया-'हम तो लूट लिया मिलकर हुस्न वालां ने, गोरे-गोरे गालां ने काले-काले बालां ने...' जब मने उन्ह इस रोमांटिक गीत गाने पर बधाई दा तो पता चला कि जनाब हलवाई थे और अपने पड़ोस म रहने वाला हिन्दू लड़का से प्रेम करते थे, जिसे कभी न कह पाए. कुँवारे हा रह गए. मिठाई बनाते और गाते हुए कब ज़िन्दगी का सांझ हो गई, पता हा नहां चला। चाहने वालां का तकदार बुरा होती है, उनके गीत का माफत जैसे मने खुद से पूछा। 'चमन पर रह कर वीराना मेरा दिल होता जाता है...' गीत तड़प से भरा था। यशोदाबाई ने गीत गाया-याद म तेरा जाग कर करवटे बदलते रहे हम, जब से तूने निगाह फेरा है दिन सूना, रात अंधेरा है... वास्तव म हम सब नितांत अकेले हा होते ह।

जब-जब माहौल गमगीन हो जाता तो एक दादा झूलेलाल का जयकारा लगाने चले आते। उनके माइक टेस्ट करते हुए ठोकने-बजाने पर उनके एक साथी ने टोका–'अबे! माइक क्या ठोक रहा है, दिमाग ठोक जिसम भूसा भरा है, आवाज़ कैसे सहा निकलेगी।' वे इस तरह के मज़ाक आपस म कर रहे थे। एक दूसरे पर हंस रहे थे। अपने साथियां को पागल-सिरफिरा कह रहे थे। जैसे हम अपने दोस्तां को नाम से कहाँ पुकारते है।

साले, गधे, उल्लू के पट्ठे आदि कह कर बात करते है ठीक वैसे हा। म शायद समझ पा रहा हूँ उम्र के इस पड़ाव म इनके अपने मित्र संगी साथी बिछुड़ गए हांगे। कुछ तो जीवन का एकाकोपन झेल नहां पा रहे है, सच है अपने हमउम्र के साथ भावनाओं का विनिमय किया जा सकता है और इस [illegible] "Nothing is good or bad but thinking make so." [illegible]

[illegible]

[illegible] विकल्प स्त्री [illegible]

[illegible] दृश्य [illegible]

श्रद्धा श्री[illegible]